Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

वर्तमान समय में कत्थक नृत्य के जयपुर घरानें की शैलीगत विशेषता

PAWAN KUMAR[1] & DR. ANKIT BHATT[2]

[1]Ph.D. Research Scholar, Department of Music, Banasthali Vidyapith (Rajasthan)
[2]Assistant Professor (Sitar), Department of Music, Banasthali Vidyapith (Rajasthan)

सार संक्षेपिका

जयपुर घराना कत्थक नृत्य की हिन्दू शैली का प्रतिनिधी घराना है। जो अपनी परंपरा, शैली, पंथ, आचार व साम्प्रदाय की भिन्नता और विशेषता के लिए जाना जाता है। वर्तमान समय में कत्थक नृत्य के जयपुर घरानें की सार्थकता व जयपुर घरानें की विविधता, विशालता व सरलता को बनाए रखना और बढ़ावा देने की दृष्टि से शोध के माध्यम से अवगत करवाया जाएगा।

शोध का उद्देश्य: वर्तमान समय में कत्थक नृत्य के जयपुर घरानें की शैलीगत विशेषता का अध्ययन

कुंजी शब्द : कत्थक, नृत्य, शैलीगत

भूमिका

नृत्य मनुष्य की एक शारीरिक, अर्थपूर्ण एवं भावपूर्ण अभिव्यक्ति है जिसे मनुष्य शारीरिक अंगों को विभिन्न गतियों या मुद्राओं द्वारा किसी ताल व लय के अनुरूप प्रकट करता है। चाहे वह भाव क्रोध का, उल्लास का या किसी भी रस का हो सकता है। इसलिए कहा भी गया है :

''नृत्यमयम जगत''।

अर्थात् सारा संसार नृत्यमय है।

"यो नृत्यति प्रहष्टात्मा भावैर्व्यंतभक्ति:।

स निर्दयति पापानि जन्मांतरश्तैरपी ।।" - द्वारका माहात्म्य

जो प्रसन्नचित से, श्रद्धा और भक्तिपूर्ण भाव से नृत्य करते हैं, जन्म-जन्मांतरों के पापों से मुक्त हो जाते हैं। अर्थात भारतीय संस्कृति में नृत्य को ईश्वर की आराधना माना गया है। पं॰ तीर्थ राम आज़ाद : भाष्यकार पतंजलि नें "नृ" धातु से नृत्य शब्द की व्युत्पत्ति स्वीकार की है और नृत का अर्थ शरीर के विभिन्न भागों के हिलाने डुलाने को माना है। शरीर विज्ञान, मनोविज्ञान व विकासवाद के सिद्धांतों में विश्वास रखने वाले विद्वान मानवीय सभ्यता के विकास में नृत्य का महत्वपूर्ण योगदान मानते है। 'विल्हेम बूण्ट' का मत है कि आरंभ में नृत्य ही मानव जाती कि सम्पूर्ण अभव्यक्ति का माध्यम था। भारतीय नृत्यकला का इतिहास की एक समृद्धशाली परंपरा रही है। मनुष्य की प्रकृतिक आदिम सभ्यता, प्रागैतिहासिक काल, मोहनजोदाड़ों एवं हड्ड़पा संस्कृति से लेकर आधुनिक समकालीन परिप्रेक्ष्य तक भारतीय नृत्यों के विभिन्न काल सुसंस्कृत होकर एक परिष्कृत रूप मे समस्त संसार को प्रभावित किए हुये है।

कत्थक नृत्य उत्तर भारत का एकमात्र शास्त्रीय नृत्य हैं। 'कत्थक' शब्द का प्रयोग प्रथमत: हमें कथा कहने वालों के रूप में प्रकट होता है। कत्थक जगत में यह लोकोक्ति प्रचलित है, कि ''कथन करे सो कथक कहावे'' अर्थात कथा कहने वाले कथक कहलाते हैं। पौराणिक कथाओं को मंदिरों में नृत्य व संगीत के माध्यम से सुनाने वाले कथक कहलाते थे। अपनी परंपरा, शैली, पंथ, आचार व साम्प्रदाय की भिन्नता और विशेषता के कारण कत्थक के तीन प्रमुख घरानें बने।

1. जयपुर घराना

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

2. लखनऊ घराना

3. बनारस घराना

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह का कत्थक के विकास में विशेष योगदान रहा जिसे वर्तमान में कत्थक का चौथा घराना रायगढ़ के रूप मे स्वीकार कर लिया गया है।

कत्थक नृत्य के जयपुर घरानें पर शोध एक सामयिक आवश्यकता है। जयपुर घरानें के आवश्यक पहलुओं पर अध्ययन कर्ताओं व पाठकों का ध्यान आकर्षित करना तथा विषय से सम्बन्धित उपयुक्त एवं महत्वपूर्ण जानकारियों को विभिन्न गुरूओं व कलाकारों से सम्पर्क कर तथा अन्य माध्यमों से संकलित करना जिससे भविष्य में यह जानकारियॉ सम्बन्धित ज्ञान पिपासुओं के लिए मार्गदर्शन व ज्ञान वर्धन का कार्य कर सके। जयपुर घराने के कत्थक नृत्य का महत्व व व्यापकता का अध्ययन करना शोध का उद्देश्य है।

कत्थक नृत्य का जयपुर घराना

जयपुर घराना कथक नृत्य की हिन्दू शैली का प्रतिनिधि घराना है। जो पूरी राज्यस्थान की परम्परा का प्रतिनिधि है। इस घरानें के गुरुओं और कलाकारों द्वारा विभिन्न प्रयोग एवं चिंतन से यहां की नृत्य शैली समृद्ध तो हुई है साथ ही इसके सौंदर्य में भी वृद्धि हुई है। जयपुर घराने को लेकर यह मान्यता है की जयपुर घराना का नृत्य वीर रस प्रधान है या नृत प्रधान और अपनी लयकारी, तेजी तैयारी व चक्करों के लिए जाना जाता है। परंतु जब गहराई से इसे समझने की कोशिश करते है तो ज्ञात होता है कि यह परम्परा अपने भाव (नृत्य) पक्ष में भी उतनी ही प्रवीण है। विलम्बित लय में गत-निकास, तत्कार की छंदों के आधार पर अलग अलग तरह की निकासी, पारंपरिक लमछड़ परनें, विभिन्न लयकारियाँ, तबले के कायदों पर ततकार,भक्ति-प्रधान भाव पक्ष इत्यादि अन्य घरानों से इसे अलग करती है।

वर्तमान समय में कत्थक नृत्य के जपयुर घरानें की शैलीगत विशेषताएं

कत्थक नृत्य के सभी घरानों में वर्तमान सयम में थाट, आमद, परण तोड़े आदि प्रदर्शित किए जाते है किन्तु अदायगी निकास व प्रस्तुतीकरण की भिन्नता होने के कारण जयपुर घराने की कुछ प्रमुख विशेषताऐं है जिनके द्वारा इसका अलग स्वरूप दिखाई देता है।

वन्दना या पुष्पांजली

जयपुर घरानें के नर्तकों या गुरूओं के हिन्दू राजाओं के दरबारों का आश्रय रहने के परिणाम स्वरूप इस नृत्य के प्रारंभ में ईष्ट देव स्तुति जिसमें गणेश वन्दना गुरू वन्दना इत्यादि की प्रथा चली आ रही है। सलामी का प्रयोग इस घराने में कभी ही हुआ होगा। जयपुर घराने के नृत्य में सात्विक अथवा भक्ति भाव वर्तमान में भी दृष्टिगोचर होता है। पं० राजेन्द्र गंगाजी के अनुसार राजस्थान में वर्तमान में ऐसे परिवार है जो मन्दिर में पूजा के तौर पर नृत्य से अपनी हाजरी देते रहते है। मन्दिर में किए जाने वाला कत्थक व मंच पर किए जाने वाला कत्थक की बन्दिशें व भाव अलग होता है।

थाट : कथक नृत्य में प्रारम्भिक मुद्रा अथवा खड़े रहने की स्थिति को थाट कहते है। जयपुर घराने में थाट बनाने का अपना अन्दाज है। पं० कुन्दन लाल गंगानी जी के अनुसार पारम्परिक थाट, जिसे कहा जाए तो सिर्फ एक मुद्रा में खड़े हो जाना ही थाट होता है। आजकल बड़े व लम्बे बोलो को लेकर थाट बनाने की परम्परा चल पड़ी है। जैसे ही हम आगे बढ़ते है, मतलब लय में आते है वहां से उसे उठान कहते है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

उपज : वर्तमान समय में थाट से भी पहले 'उपज' नाचने व लेने की परम्परा नए नर्तकों और गुरूओं द्वारा शुरू हुई है। जिसे लय कायम करने का एक अच्छा तरीका समझा जाता है। इससे प्रस्तुतकर्ता व दर्शकों में लय अच्छे से विस्थापित हो जाती है। परन्तु उपज तत्कालीन होनी चाहिए। रटी-रटाई चीजें बन्दिशें निश्चय ही वो आनन्द नहीं दे पाती। उपज में पावं/ततकार द्वारा विभिन्न लयकारियों का प्रदर्शन किया जाता है।

आमद : जब नर्तक एक विशेष बन्दिश/बोल नाचता हुआ मंच पर प्रदेश करता था उसे आमद कहा जाता था क्योंकि वर्तमान समय में नर्तक या नर्तकी आमद से पहले ही मंच पर प्रवेश कर चुका होता है तो यह एक विशेष बन्दिश के तौर पर इसे नाचा जाता है। जयपुर घराने की आमद के लयकारी व निकासी अनुसार अपना अन्दाज है। ''ता थेई तब थेई'' व ''ता थेई तत'' इन शब्दों को विभिन्न् तालों की जातियों अनुसार अलग-अलग लयकारियों में प्रस्तुत किया जाता है। परणजुड़ी आमद में धातिट धातिट व धात्रक धिकिट परणों को जोड़ा जाता है। इनकी लय अन्य घरानों से कही अधिक रखी जाती है तथा अन्त में तेज चक्रों की तिया से समापन होता है। गुरू श्रीमती प्रेरणा श्री माली जी के अनुसार कई बार परण को आमद के रूप में भी नाचा जाता है जिसमें सिर्फ परण के बोल होते है। उस जगह बोलो की बनावट व अंगों की बनावट पर भी निर्भर करता है।

उठान या चौक भरना : थाट के बाद जैसे ही अंग खुला, बोल बड़ने लगे या जहां से बोल उठने लगे उठे उठान कहते है। किसी भी मात्रा पर खड़े होना थाट कहलाता है तो किसी भी मात्रा से उठकर सम पर आना उठान कहलाता है। पं० दुर्गालाल जी की ताथेई थेई तऽत की उठान बहुत प्रसिद्ध थी।

कायदा और चलन : जयपुर घराने के नर्तक गुरू अच्छे तबला वादक व पखावज वादक भी रहे है। जयलाल ने सेखावाटी के महान तबला वादक उ० जीवन खाँ से विधिवत गंडा बंधवाकर तबला वादन व नृत्य की शिक्षा ली। पं० कुन्दन लाल गंगानी उ० विशमिल्ला खां साहब के साथ बैठकर तबला बजाते थे। पं० फतेह सिंह गंगानी जी के अनुसार कत्थक नृत्य तबला ही है अर्थात कथक नर्तक तबला ही नाचते है। वर्तमान में जयपुर घरानें के बहुत से कलाकार तबला व पखावज पर जयपुर घराना ही नहीं अपितु अन्य घरानों के नर्तकों के साथ भी संगत कर रहे है। जिसमें योगेश गंगानी, फतेह सिंह गंगानी, महावीर प्रसाद आदि प्रमुख नाम है।

इसी कारण जयपुर घराने में परणों के अतिरिक्त तबले के कायदे व चलन नाचने की भी परम्परा शुरू हो गई जिसमें ''धातिट धातिट धाधातिट'' व ''धिना तकिट धागेतिना किना'' इत्यादि कायदों को पांव द्वारा वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। तबले व पखावज के विभिन्न बोलो/शब्दों को विभिन्न चालों द्वारा प्रस्तुती जयपुर घराने के नृत्य को और भी आकर्षित व चत्मकारिक बना रही है।

तोड़ा और टुकड़ा : तोड़े टुकड़े की संज्ञाए स्पष्टत: मृदंग व तबले से ली गई है। इन्हें विभिन्न लयों में तिहाईयों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। सम से सम तक एक आर्वतन पर्यन्त चलने वाले बोल समुह को टुकड़ा कहते है। टुकड़ा नटवरी का ही एक अंश होता है। इसमें प्राय: ताथेई तत या तिग्धा दिगदिग के बोल होते है। ये विभिन्न लयों व जातियों में होते है। संगीत का तोड़ा, पिमल्लु तोड़ा इत्यादि भी जयपुर घराने की विशेषता है। इसमें कलिष्ट बंदिशे, जोश खरोश, तैयारी व भ्रमरी का प्रदर्शन जयपुर घरानें की विशेषता है।

पद संचालन व बोलो की निकासी : पद संचालन व बोलों की निकासी जयपुर घरानें की मुख्य विशेषता है। जिस प्रकार एक कुशल तबला वादक कायदा, पलटा,गत, रेला, परन व लग्गी इत्यादि के द्वारा ताल का प्रस्तार करता है उसी प्रकार जयपुर घराने में नर्तक तबले या नृत्य में पूरे-पूरे शब्दों को पांव से निकालकर नृत्य को और भी मजबूत करते हैं। कत्थक नृत्य प्रदर्शन में आधा भाग नृत पक्ष से पूरा होता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

अप्रचलित तालों में नृत्य : जयपुर घरानें में अप्रचलित तालों में नृत्य प्रदर्शन की परम्परा रही है। वर्तमान समय में इसमें थोड़ी कमी आई है परन्तु फिर भी परम्परा को मानने वाले गुरू व नर्तक धमार, रूद्र, अष्टमंगल, लक्ष्मी व गणेश इत्यादि तालों में नृत्य प्रदर्शन करते है। पं० कुन्दन लाला गंगानी जी के शब्द ''ताल में नहीं हमेशा ताल को नाचों'' से स्पष्ट होता है कि ताल में डूबकर व समझकर आनन्द पूर्वक नाचना चाहिए। बोलो की निकासी पर भी वर्तमान समय में बहुत ध्यान दिया जा रहा है। पं० राजेन्द्र गंगानी जी अनुसार एक अंग से दुसरा अंग एक माला की तरह जुड़ना चाहिए। शरीर के अंगो की अप्राकृतिक लय या गति अथवा अंगों का टकराव नहीं होना चाहिए। निकासी सुन्दर व आसान होनी चाहिए।

कवित्त : कविता में नृत्य अर्थात कविता में भाव प्रदर्शन कत्थक नृत्य की सुन्दरता में से एक विशेष अंग है। जयपुर घराने में कवित्त में भाव प्रदर्शन की अपनी विशेषता है। जिसमें कलिया दमन, माखन चोरी, राधा कृष्ण की छेड़छाड़ इत्यादि प्रमुख है।

गत-निकास, गत भाव में जयपुर घराने के नर्तकों ने नए अविष्कार किए है। विलम्बित लय में गत निकास व गत भाव में लयकारियों का सहयोग जयपुर घराने के कत्थक को और भी रोचक बनाता है।

भाव पक्ष : हमेशा कहा जाता है कि जयपुर घराना अपनी तेजी-तैयारी, चक्रों व लयकारी के लिए प्रसद्धि है परन्तु वर्तमान समय में जयपुर घराने के नर्तकों व गुरूओं ने अंगों की निकासी व भाव पक्ष पर नए अविष्कार नृत्य के भाव पक्ष को और सुन्दर बना दिया है। हिन्दू राजाओं में आश्रय मिलने के कारण भक्ति प्रधान रचनाओं में भाव प्रदर्शन की परम्परा रही है। जिसने मीरा के भजन, जयदेव के पदों पर नृत्य किया जाता है। वर्तमान समय में अलग-अलग भाषाओं की रचनाओं पर नृत्य किया जाता है। जिसमें राजस्थानी पंजाबी (सूफी) मराठी व बंगाली रचनाएं प्रमुख है।

निष्कर्ष

जयपुर घराने में जहां पद-संचालन का कार्य अधिक या ततकार की विभिन्नता व कलिष्ट तालों जैसे धमार, अष्टमंगल, लक्ष्मी, ब्रह्मा इत्यादि कलिष्ट तालों में नृत्य करना इस घरानें की विशेषता रही वही वर्तमान समय में पद संचालन के साथ अंगों की निकासी पर भी बहुत ध्यान दिया जा रहा है जिससे जयपुर घराने का कथक नृत्य और भी सुन्दर हो गया है। इसके अतिरिक्त चमत्कार प्रदर्शन, पैरों की शुद्धता व विभिन्न प्रकार से बोलो की निकासी, कविता के साथ भावों का सफलतापूर्वक प्रदर्शन जयपुर घराने की शैलीगत विशेषता है। तबला, पखावज व नृत्य के बोलो को मिलाकर व पौराणिक कथाओं का प्रस्तुतीकरण इस घरानें की अलग पहचाना है। गणेश परण, शिव परण, प्रिमल्लु, तलवार व बाजुवद की गत आदि जयपुर, घराने की विशेषता बनाए रखे है। जयपुर घराने में प्रयोग व सृजन की गहरी सम्भावनाएं है व गतिशील है।

साक्षात्कार

1. पं० राजेन्द्र गंगानी, चर्चा, दिल्ली 03/07/2023 (पुर्वाहन)
2. पं० फतेह सिंह गंगानी, चर्चा दिल्ली 03/07/2023
3. श्री मती ईला पाण्डेय, चर्चा, चण्डीगढ़ 05/07/2023

सन्दर्भ

1. जयचन्द्र शर्मा, संगीत (पित्रका), पृ० 38, संगीत कार्यालय हाथरस (उ०प्र०).
2. डॉ० माया टाक, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य, पृ० 22,23 व 158 कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली 110002.
3. नागेश्वर लाल कर्ण, कत्थक नृत्य के तबला संगति, पृ० 214 कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली 110002.